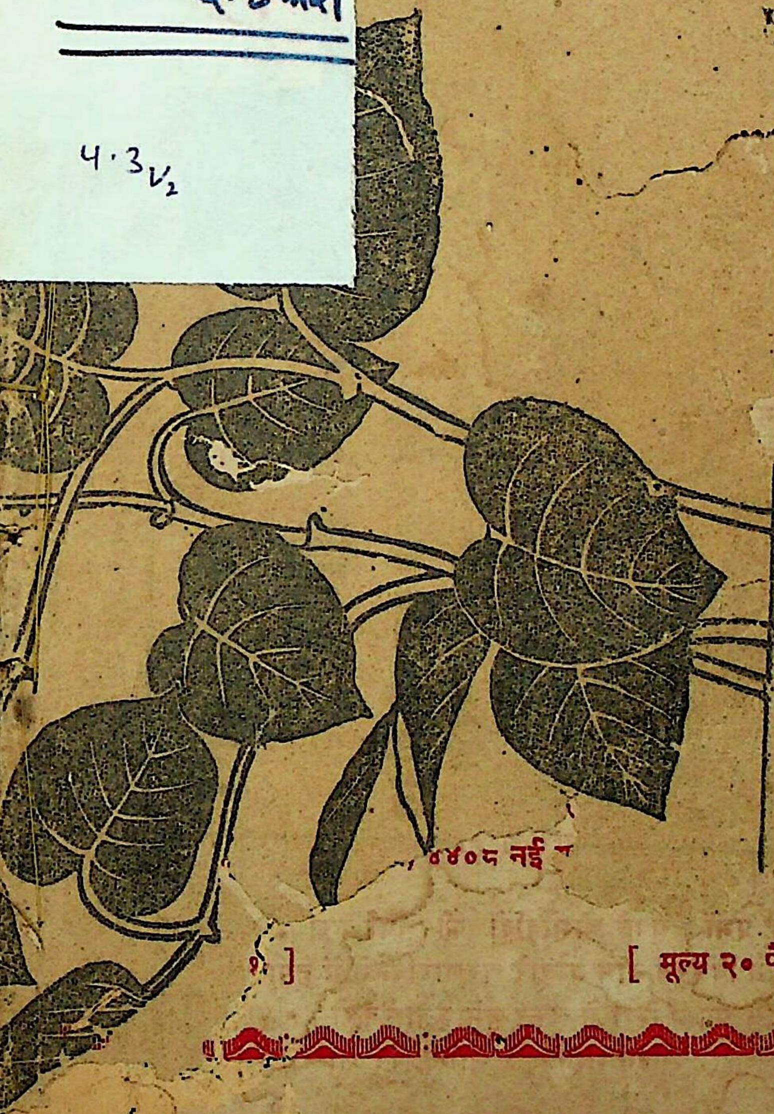


४४०८ नई

१ ]

[ मूल्य २० पैसे

...म बिजली ठप्प
...नगर से लगभग ५
...विद्युत वितरण केन्द्र
... ट्रांसफार्मर ... के
...ाने के फलस्वरूप नगर
...ठप हो जाने से ...

...प्रचारक
...नों की
...ी

हो गया है।

अत्याचार किया।

# लू से झांसी में ३ व्यक्ति मरे, १३ बीमार

## बुंदेलखंड के अनेक गांवों में पेय जल की भीषण कमी; दो दर्जन गांवों में चेचक का प्रकोप

झांसी' २८ मई। यहां तीन व्यक्तियों के आज लू लग जाने से ...ी खबर प्राप्त हुई है। ...र्मी से १३ व्यक्ति बीमार ...ये हैं।

...सी पिछले कई दिनों से ...षण गर्मी की चपेट में हैं। ...स मौसम में यहां अधिकतम ...पमान १४ डिग्री फारेन... रिकार्ड किया गया।

बुन्देलखंड क्षेत्र के अनेक गांवों में पेय जल की भारी कमी हो गयी है।

झांसी जिले के दो दर्जन से भी अधिक गांव चेचक के प्रकोप ...ड़ित हैं।

पर वहां बस...
ने वहां के ज...
और भूमि पर
कांश भूमि को...
...या।

पं...
से ...

ज...
जा...
एक...
कानू...
सम...

॥ ओ३म् ॥

# वैदिक यज्ञ-प्रकाश

सन्ध्या, प्रार्थना, स्वस्तिवाचन, शान्ति प्रकरण
प्रधान हवन, सङ्गठन सूक्त
आर्य समाज के नियम
भक्ति रस के
मनोहर भजन

प्रकाशक



गोविन्दराम हासानन्द
आर्य साहित्य भवन, ४४०८ नई सड़क, दिल्ली

सम्वत् २०२१ ] [ मूल्य २० पैसे

# ❀ प्रार्थना ❀

हे सर्वाधार, सर्वान्तर्यामिन् परमेश्वर ! तुम अनन्तकाल से अपने उपकारों की वर्षा किये जाते हो । प्राणिमात्र की सम्पूर्ण कामनाओं को तुम्हीं प्रतिक्षण पूर्ण करते हो । हमारे लिए जो कुछ शुभ है तथा हितकर है उसे तुम बिना माँगे ही स्वयं हमारी झोली में डालते जाते हो । तुम्हारे आँचल में अविचल शान्ति तथा आनन्द का वास है । तुम्हारी चरण-शरण की शीतल छाया में परम तृप्ति है, शाश्वत सुख की उपलब्धि है तथा सब अभिलषित पदार्थों की प्राप्ति है ।

हे जगत्पिता परमेश्वर ! हम में सच्ची श्रद्धा तथा विश्वास हो । हम तुम्हारी अमृतमयी गोद में बैठने के अधिकारी बनें । अन्तःकरण को मलिन बनाने वाली स्वार्थ तथा संकीर्णता की सब क्षुद्र भावनाओं से हम ऊँचे उठें । काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष इत्यादि कुटिल भावनाओं तथा सब मलिन वासनाओं को हम दूर करें । अपने हृदय की आसुरी प्रवृत्तियों के साथ युद्ध में विजय पाने के लिए हे प्रभो ! हम तुम्हें पुकारते हैं और तुम्हारा आँचल पकड़ते हैं ।

हे परम पावन प्रभु ! हममें सात्त्विक वृत्तियाँ जागृत हों । क्षमा, सरलता, स्थिरता, निर्भयता, अहङ्कारशून्यता इत्यादि शुभ भावनाएं हमारी सम्पत्ति हों । हमारा शरीर स्वस्थ तथा परिपुष्ट हो, मन सूक्ष्म तथा उन्नत हो, आत्मा पवित्र तथा सुन्दर हो । तुम्हारे संस्पर्श से हमारी सारी शक्तियाँ विकसित हों, हृदय दया तथा सहानुभूति से भरा हो । हमारी वाणी में मिठास हो तथा दृष्टि में प्यार हो । विद्या और ज्ञान से हम परिपूर्ण हों । हमारा व्यक्तित्व महान् तथा विशाल हो ।

हे प्रभो ! अपने आशीर्वादों की वर्षा करो । दीनातिदीनों के मध्य में विचरने वाले तुम्हारे चरणारविन्दों में हमारा जीवन अर्पित हो, इसे अपनी सेवा में लेकर हमें कृतार्थ करो ।

ओ३म् शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!



❀ ओ३म् ❀

# वैदिक सन्ध्या

पहले जलादि से बाह्य शुद्धि फिर राग द्वेषादि त्याग से भीतर की शुद्धि करनी चाहिए। तत्पश्चात् कुशा या हाथ से मार्जन करें। फिर कम से कम तीन प्राणायाम करें। तत्पश्चात् पृष्ठ ९ पर लिखे गायत्री मन्त्र से शिखा को बाँध कर रक्षा करें।

**अथ आचमनमन्त्रः**

निम्न मन्त्र को पढ़ कर तीन बार आचमन करे।

**ओं शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।**
**शंयोरभि स्रवन्तु नः ॥** [ यजु० अ० ३६ मन्त्र १२ ]

सर्वव्यापक और सर्वप्रकाशक परमेश्वर मनोवाञ्छित सुख और पूर्णानन्द की प्राप्ति के लिए हम को कल्याणकारी हो और हम पर सुख की सब ओर से सर्वदा वृष्टि करे ॥१॥

॥ **अथेन्द्रियस्पर्शमन्त्रः** ॥

**ओं वाक् वाक्। ओं प्राणः प्राणः।**
**ओं चक्षुः चक्षुः। ओं श्रोत्रं श्रोत्रम्।**
**ओं नाभिः। ओं हृदयम्। ओं कण्ठः।**
**ओं शिरः। ओं बाहुभ्यां यशोबलम्।**
**ओं करतलकरपृष्ठे।**

हे अन्तर्यामिन्! मैं आपके सम्मुख प्रार्थना करता हूँ कि मैं जान-बूझ कर अपनी ५ ज्ञान और ५ कर्म-इन्द्रियों से अर्थात् वाक्, प्राण,

चक्षु, श्रोत्र, नाभि, हृदय, कण्ठ, शिर, बाहु, करतल और पृष्ठ आदि से कदापि पाप न करूँ ऐसी कृपा करो ॥२॥

॥ अथेश्वरप्रार्थनापूर्वकमार्जनमन्त्राः ॥

**ओं भूः पुनातु शिरसि । ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः । ओं स्वः पुनातु कण्ठे । ओं महः पुनातु हृदये । ओं जनः पुनातु नाभ्याम् । ओं तपः पुनातु पादयोः । ओं सत्यं पुनातु पुनश्शिरसि । ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र ।**

इससे कुशा से वाम हाथ में जल लेकर इन्द्रियों का मार्जन करे। इसका अभिप्राय यह है कि ईश्वर की प्रार्थना से सब इन्द्रियाँ बलवान् रहें।

हे दयानिधे ! निर्बल हूँ अतः आपकी शरण हूँ सो आप ही इन इन्द्रियों अर्थात् शिर, नेत्र, कण्ठ, हृदय नाभि, पग आदि सब को पवित्र करके मुझे बलवान् और यशस्वी कीजिए अर्थात् पूर्व मन्त्रोक्त सब नाम परमेश्वर ही के हैं। इस प्रकार ईश्वर के नामों के अर्थों का विचार स्मरण करते हुए मार्जन करें।

॥ अथ प्राणायाममन्त्रः ॥

**ओं भूः । ओं भुवः । ओं स्वः । ओं महः । ओं जनः । ओं तपः । ओं सत्यम् ॥**

[ तैत्ति० आ० प्रपा० १० । अनु० २७ ]

प्राणस्वरूप, प्राण से प्यारा, दुःख दूर करने हारा, सर्वव्यापक, आनन्दस्वरूप, सब से बड़ा, सब का ( जनक ) पिता, दुष्टों को

सन्तापकारी, जब के जानने वाला और अविनाशी प्रभु है।

इनका उच्चारण और अर्थ विचार करके कम से कम तीन प्राणायाम करे। ( देखिए 'प्राणायाम विधि' पुस्तक )

॥ अथ अघर्षणमन्त्राः ॥

**ओ३म् ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।**
**ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः ॥१॥**
**समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत।**
**अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ॥२॥**
**सूर्य्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।**
**दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः ॥३॥**

[ ऋ० मण्ड० १० । सू० १९० मं० १, २, ३ ]

परमेश्वर की ज्ञानमय अनन्त सामर्थ्य से वेद विद्या और कार्य रूप प्रकृति उत्पन्न हुए। उसी सामर्थ्य से प्रलय और उसी सामर्थ्य से जल के समुद्र उत्पन्न हुए।

जगत् को वश में रखने वाले परमेश्वर ने अपने सहज स्वभाव से जलकोश के पीछे काल विभाग, वर्ष, दिन, रात्रि रचे।

विधाता ने पहले कल्प जैसे सूर्य, चन्द्र, द्युलोक, पृथ्वीलोक, अन्तरिक्ष और उसमें फिरने वाले लोकान्तर बनाये।

(शन्नो देवी०) इस मन्त्र से पुनः तीन आचमन करे। तदनन्तर गायत्र्यादि मन्त्रों के अर्थ विचार पूर्वक परमेश्वर की स्तुति अर्थात् परमेश्वर के गुण और उपकार का ध्यान इत्यादि करें।

॥ अथ मनसापरिक्रम मन्त्राः ॥

ओं प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥१॥

हे सर्वज्ञ परमेश्वर ! आप हमारे सम्मुख की ओर विद्यमान हैं। स्वतन्त्र राजा हैं और हमारी रक्षा करने वाले सूर्य को आपने रचा है जिसकी किरणों द्वारा पृथ्वी पर जीवन आता है। आपके आधिपत्य, रक्षा और जीवन रूपी दान के लिए, प्रभो ! आपको बारम्बार नमस्कार है। जो अज्ञान से हम से द्वेष करता है अथवा जिससे हम द्वेष करते हैं उसे हम आपके न्यायरूपी सामर्थ्य पर छोड़ देते हैं।

दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः। तेभ्यो० ॥२॥

हे परमेश्वर ! आप हमारे दक्षिण की ओर व्यापक हैं। आप ही हमारे राजाधिराज हैं और भुजंगादि बिना हड्डी वाले जीवों से हमारी रक्षा करते हैं और ज्ञानियों द्वारा हमें ज्ञान प्रदान करते हैं। आप के अधिपतिभ्यो ( आगे पूर्व के समान अर्थ )—

प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः। तेभ्यो० ॥३॥

हे सौन्दर्य के भण्डार ! आप हमारे पृष्ठ की ओर हैं, हमारे महाराज हैं, बड़े-बड़े हड्डी वाले व विषधारी पशुओं से हमारी रक्षा करते हैं। आपके ( आगे पूर्व के समान अर्थ )—

उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिता-शनिरिषवः । तेभ्यो० ॥४॥

हे पिता आप हमारे वाम पार्श्व में व्याप्त हैं और हमारे परम ऐश्वर्ययुक्त स्वामी हैं । स्वयम्भू और हमारे रक्षक हैं आप ही बिजली द्वारा हमारी रुधिर-गति की और प्राणों की रक्षा करते हैं। आपके ( आगे पूर्व के समान अर्थ )—

ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः । तेभ्यो० ॥५॥

हे सर्वव्यापक प्रभो ! आप हमारे नीचे की ओर की दिशा में विद्यमान हैं और हमारे राजा हैं । आप हरे रंग वाले वृक्षों और बेलों द्वारा हमारे प्राणों की रक्षा करते हैं । आपके (आगे पूर्व के समान अर्थ)

ऊर्ध्वा दिग् बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः । तेभ्यो० ॥६॥ [अथर्व० ३ । २७ । १ । ६]

हे महान् प्रभो ! आप ऊपर की ओर लोगों में व्यापक पवित्रात्मा हमारे स्वामी और रक्षक हैं । आप वर्षा करके हमारी कृषि को सींचते हैं जिससे हमारा जीवन होता है । आपके (आगे पूर्व के समान अर्थ)

॥ अथोपस्थानमन्त्राः ॥

ओं उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम् ।
देवं देवत्रा सूर्य्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥१॥

[ य० अ० ३५ । मं० १४ ]

हे प्रभो ! हम जो आपको जानते हैं कि आप अज्ञान अन्धकार से परे सुखस्वरूप, प्रलय के पश्चात् रहने वाले, दिव्य गुणों के साथ

सर्वत्र विद्यमान देव और हमको जन्म देने वाले हैं सो हम आपके उत्तम ज्योति:स्वरूप को प्राप्त होवें।

उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः दृशे विश्वाय सूर्य्यम् ॥२॥ [ यजु० अ० ३३। मं० ३१ ]

हे जगदीश्वर ! जो आप सकल ऐश्वर्य के उत्पादक, सर्वज्ञ और जीवात्मा के प्रकाशक हैं, आपकी महिमा सबको दिखाने के लिए संसार के पदार्थ पताका का काम देते हैं। जिस प्रकार झण्डियाँ मार्ग दिखलाती हैं उसी प्रकार सब स्वाभाविक वस्तुएँ या सृष्टि-नियम परमेश्वर की प्रतीति कराते हैं।

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षꣳ सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा ॥३॥

[ यजु० अ० ७ मंत्र ४२ ]

हे स्वामिन् ! यद्यपि इस संसार के पदार्थ आपको दर्शाते हैं परन्तु आप अद्भुत और विचित्र हैं आप दिव्य पदार्थों के बल हैं। सूर्य, चन्द्र और अग्नि के चक्षु अथवा प्रकाशक हैं। भूमि आकाश और तदन्तर्गत लोक सब आपकी सामर्थ्य में हैं। आप चर अचर जगत् के उत्पादक और अन्तर्यामी हैं। हे प्रभो ! हम ऐसे बलवान् हों कि सदैव मन, वाणी और कर्म से सत्य का ग्रहण करें।

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः

शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥४॥

[ यजु० अ० ३६ । मंत्र २४ ]

हे सब के चक्षु ! आप अनादि काल से विद्वानों और संसार के हितार्थ शुद्ध वर्तमान हैं । प्रभो ! हम आप को सौ वर्ष सुनें, आप के नाम का सौ वर्ष व्याख्यान करें, सौ वर्ष की आयु भर पराधीन न हों और यदि योगाभ्यास से सौ वर्ष से भी अधिक आयु हो तो इसी प्रकार विचारें ।

(शन्नो देवी०) इस मन्त्र से तीन आचमन करें ।

॥ अथ गायत्रीमन्त्रः ॥

ओं भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

[ य० अ० ३६ मं० ३ ॥ ऋ० मण्ड० ३ सू० ६२ मं० १० ]

हे प्राण, दुःखहर्ता और व्यापक, आनन्द के देने वाले प्रभो ! जो आप सर्वज्ञ और सकल जगत् के उत्पादक हैं, हम आपके उस पूजनीयतम, पापनाशकस्वरूप तेज का ध्यान करते हैं, जो हमारी बुद्धियों को प्रकाशित करता है । हे पिता ! आप से हमारी बुद्धि कदापि विमुख न हो । आप हमारी बुद्धियों में सदैव प्रकाशित रहें और हमारी बुद्धियों को सत्कर्मों के लिये प्रेरित करते रहें, ऐसी प्रार्थना है ।

समर्पणम्

हे ईश्वर दयानिधे ! भवत्कृपयाऽनेन जपोपासनादिकर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः ॥

इस प्रकार से सब मन्त्रों से परमेश्वर की सम्यक् उपासना करके आगे समर्पण करे। हे ईश्वर दयानिधे ! आपकी कृपा से जो जो उत्तम काम हम करते हैं वे सब आप के समर्पण हैं जिससे हम लोगों को आप की प्रीति होके धर्म जो सत्य न्याय का आचरण करना है, अर्थ जो धर्म से पदार्थों की प्राप्ति करना है, काम जो धर्म और अर्थ से इष्ट भोगों का सेवन करना है और मोक्ष जो सब दुःखों से छूट कर सदा आनन्द में रहना है इन चार पदार्थों की सिद्धि हम को शीघ्र प्राप्त हो।

॥ अथ नमस्कार-मन्त्रः ॥

**ओं नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥** [ य० अ० १६ मं० ४१ ]

नमस्कार है कल्याण के और सुख के स्रोत ( चश्मे ) को, कल्याण के देने वाले और सुख के देने वालों को नमस्कार है, कल्याण स्वरूप और अत्यन्त कल्याणस्वरूप आपको हमारा बारम्बार नमस्कार है।



ओ३म्

# अथेश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासनामन्त्राः

ओ३म् विश्वा॑नि देव सवितर्दुरि॒तानि॒ परा॑ सुव ।
यद् भ॒द्रं तन्न॒ आ सु॑व ॥ १ ॥ यजु० अ० ३० । मं० ३ ॥

हि॒र॒ण्य॒ग॒र्भः सम॑वर्त॒ताग्रे॑ भू॒तस्य॑ जा॒तः पति॒रेक॑ आसीत् ।
स दा॑धार पृथि॒वीं द्यामु॒तेमां कस्मै॑ दे॒वाय॑ ह॒विषा॑ विधेम ॥२॥
यजु० अ० १३ । मं० ४ ॥

य आ॑त्म॒दा ब॑ल॒दा यस्य॒ विश्व॑ उ॒पास॑ते प्र॒शिषं॒ यस्य॑ दे॒वाः ।
यस्य॑ च्छा॒याऽमृतं॒ यस्य॑ मृ॒त्युः कस्मै॑ दे॒वाय॑ ह॒विषा॑ विधेम ॥३॥
यजु० अ० २५ । मं० १३ ॥

यः प्रा॑ण॒तो नि॑मिष॒तो म॑हि॒त्वैक॒ इद्राजा॒ जग॑तो ब॒भूव॑ ।
य ईशे॑ अ॒स्य द्वि॒पद॒श्चतु॑ष्पदः कस्मै॑ दे॒वाय॑ ह॒विषा॑ विधेम ॥४॥
यजु० अ० २३ । मं० ३ ॥

येन॒ द्यौरु॒ग्रा पृ॑थि॒वी च॑ दृ॒ढा येन॒ स्वः॑ स्तभि॒तं येन॒ नाकः॑ ।
यो अ॒न्तरि॑क्षे॒ रज॑सो वि॒मानः॒ कस्मै॑ दे॒वाय॑ ह॒विषा॑ विधेम ॥५॥
य० अ० ३२ । मं० ६ ॥

प्रजा॑पते॒ न त्वदे॒तान्य॒न्यो विश्वा॑ जा॒तानि॒ परि॒ ता ब॑भूव ।
यत्का॑मास्ते जुहु॒मस्तन्नो॑ अस्तु व॒यं स्या॑म॒ पत॑यो रयी॒णाम् ॥६॥
ऋ० मं० १० । सू० १२१ । मं० १० ॥

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा ।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥ ७ ॥
यजु० अ० ३२ । मं० १० ॥

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ॥८॥
यजु० अ० ४० । मं० १६ ।

# अथ स्वस्तिवाचनम्

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ।
होतारं रत्नधातमम् ॥ १ ॥
स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव ।
सचस्वा नः स्वस्तये ॥ २ ॥
ऋग्वेद मं० १ । सू० १ । मं० १, ९ ॥

स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः ।
स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना ॥३॥
स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः ।
बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः ॥४॥
विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये ।
देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः ॥५॥
स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति ।
स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि ॥६॥

स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव ।
पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि ॥७॥

ऋ० मण्ड० ५ । सू० ५१ । मं० ११ १५ ॥

ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः ।
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥८॥

ऋ० मं० ७ सू० ३५ । मं० १५ ॥

येभ्यो माता मधुमत् पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः ।
उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनु मदा स्वस्तये ॥९॥

नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद्देवासो अमृतत्वमानशुः ।
ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये ॥१०॥

सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुरपरिह्वृता दधिरे दिवि क्षयम् ।
ताँ आ विवास नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्याँ अदितिं स्वस्तये ॥११॥

को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वे देवासो मनुषो यति ष्ठन ।
को वोऽध्वरं तुविजाता अरं करद् यो नः पर्षदत्यंहः स्वस्तये ॥१२॥

येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः समिद्धाग्निर्मनसा सप्त होतृभिः ।
त आदित्या अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त सुपथा स्वस्तये ॥१३॥

य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः ।
ते नः कृतादकृतादेनसस्पर्यद्या देवासः पिपृता स्वस्तये ॥१४॥

भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहेंऽहोमुचं सुकृतं दैव्यं जनम् ।
अग्निं मित्रं वरुणं सातये भगं द्यावापृथिवी मरुतः स्वस्तये ॥१५॥

सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम् ।
दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्त्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये ॥१६॥
विश्वे यजत्रा अधि वोचतोतये त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिह्रुतः ।
सत्यया वो देवहूत्या हुवेम शृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये ॥१७॥
अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रामघायतः ।
आरे देवा द्वेषो अस्मद्युयोतनोरु णः शर्म यच्छता स्वस्तये ॥१८॥
अरिष्टः स मर्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि ।
यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये ॥१९॥
यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हिते धने ।
प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसिमरिष्यन्तमा रुहेमा स्वस्तये ॥२०॥
स्वस्ति नः पथ्यासु धन्वसु स्वस्त्यप्सु वृजने स्वर्वति ।
स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु स्वस्ति राये मरुतो दधातन ॥२१॥
स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्णस्वत्यभि या वाममेति ।
सा नो अमा सो अरणे नि पातु स्वावेशा भवतु देवगोपा ॥२२॥

ऋ० मं० १० । सू० ६३ । मं० ३-१६ ॥

इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आ प्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माघशंसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि ॥२३॥

यजु० अ० १। मं०१ ॥

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः ।
देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे॥२४॥

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानांꣳ रातिरभि नो नि वर्त्तताम् ।
देवानांꣳ सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥२५॥
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥२६॥
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥२७॥
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेम ह देवहितं यदायुः ॥२८॥

यजु० अ० २५ । मं० १४, १५, १८, १९, २१ ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये ।
१२ २र ३ १ २
नि होता सत्सि बर्हिषि ॥२९॥
१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २३ १ २
त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः । देवेभिर्मानुषे जने ॥३०॥

साम० पूर्वा० प्रपा० १ । द० १ । मं० १, २ ॥

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः ।
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे ॥३१॥

अथर्व कां० १ । सू० १ । मं० १ ॥

इति स्वस्तिवाचनम् ॥

## अथ शान्तिप्रकरणम्

शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या ।
शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ ॥१॥

शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः ।
शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु ॥२॥
शं नो धाता शमु धर्ता नो अस्तु शं न उरूची भवतु स्वधाभिः ।
शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु ॥३॥

शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना शम् ।
शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभि वातु वातः ॥४॥
शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु ।
शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः ॥५॥

शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः ।
शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टा ग्नाभिरिह शृणोतु ॥६॥
शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः ।
शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्वस्तु वेदिः ॥७॥

शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु ।
शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः ॥८॥
शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः ।
शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः ॥९॥
शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः ।
शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शंभुः ॥१०॥

शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु ।
शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः

शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः ।
शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु ॥१२॥
शं नो अज एकपाद् देवो अस्तु शं नोऽहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः ।
शं नो अपां नपात् पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपा ॥१३॥

ऋ० मं० ७ । सू० ३५ । मं० १–१३ ॥

इन्द्रो विश्वस्य राजति । शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ॥१४॥
शं नो वातः पवताᳮ शं नस्तपतु सूर्यः ।
शं नः कनिक्रदद् देवः पर्जन्यो अभि वर्षतु ॥१५॥
अहानि शं भवन्तु नः शᳮ रात्रीः प्रति धीयताम् ।
शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या ।
शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः ॥१६॥
शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये ।
शं योरभि स्रवन्तु नः ॥१७॥

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षᳮ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वᳮ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥१८॥

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतᳮ शृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥१९॥

यजु० अ० ३६ । मं० ८,१०,११,१२,१७,२४ ॥

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति ।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२०॥

येन॒ कर्मा॑ण्य॒पसो॑ मनी॒षिणो॑ य॒ज्ञे कृ॒ण्वन्ति॑ वि॒दथे॑षु॒ धीराः॑ ।
यद॑पू॒र्वं य॒क्षम॒न्तः प्र॒जानां॒ तन्मे॒ मनः॑ शि॒वसं॑कल्पमस्तु ॥२१॥
यत्प्र॒ज्ञान॑मु॒त चेतो॒ धृति॑श्च॒ यज्ज्योति॑र॒न्तर॒मृतं॑ प्र॒जासु॑ ।
यस्मा॒न्न ऋ॒ते किं च॒न कर्म॑ क्रि॒यते॒ तन्मे॒ मनः॑ शि॒वसं॑कल्पमस्तु ॥२२
येने॒दं भू॒तं भुव॑नं भवि॒ष्यत्परि॑गृहीतम॒मृते॑न॒ सर्व॑म् ।
येन॑ य॒ज्ञस्ता॒यते॑ स॒प्तहो॑ता॒ तन्मे॒ मनः॑ शि॒वसं॑कल्पमस्तु ॥२३॥
यस्मि॒न्नृचः॒ साम॒ यजूं॑षि॒ यस्मि॒न् प्रति॑ष्ठिता रथना॒भावि॑वा॒राः ।
यस्मिँ॑श्चि॒त्तꣳ सर्व॒मोतं॑ प्र॒जानां॒ तन्मे॒ मनः॑ शि॒वसं॑कल्पमस्तु ॥२४॥
सु॒षा॒र॒थिरश्वा॑निव॒ यन्म॑नु॒ष्या॒न्नेनी॒यते॒ऽभीशु॑भिर्वा॒जिन॑इव ।
हृत्प्रति॑ष्ठं॒ यद॑जि॒रं जवि॑ष्ठं॒ तन्मे॒ मनः॑ शि॒वसं॑ल्पमस्तु ॥२५॥

यजु० अ० ३४ । मं० १—६ ॥

स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते ।
शं राजन्नोषधीभ्यः ॥२६॥

साम० उत्तरार्चिके प्रपा० १ । खं० १ । मं० ३॥

अभ॑यं नः कर॒त्य॒न्तरि॑क्ष॒मभ॑यं॒ द्यावा॑पृथि॒वी उ॒भे इ॒मे ।
अभ॑यं प॒श्चादभ॑यं पु॒रस्ता॑दुत्त॒राद॑ध॒रादभ॑यं नो अस्तु ॥२७॥
अभ॑यं मि॒त्रादभ॑यम॒मित्रा॒दभ॑यं ज्ञा॒तादभ॑यं प॒रोक्षा॑त् ।
अभ॑यं॒ नक्त॒मभ॑यं॒ दिवा॑ नः॒ सर्वा॒ आशा॒ मम॑ मि॒त्रं भ॑वन्तु ॥२८॥

अथर्व० कां १९ । सू० १५ मं० ५, ६ ॥

इति शान्तिप्रकरणम्



आचमन-मन्त्र

ओम् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥ १ ॥ इससे एक,
ओम् अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥ २ ॥ इससे दूसरा,
ओं सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ॥ ३ ॥

तैत्तिरीय आरण्यक प्र० १० । अनु० ३२, ३५ ॥

इससे तीसरा आचमन करके तत्पश्चात् जल लेकर नीचे लिखे मन्त्रों से अङ्गों का स्पर्श करें।

अङ्गस्पर्शमन्त्र

ओं वाङ् म आस्येऽस्तु ॥ इस मन्त्र से मुख,
ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु ॥ इस मन्त्र से नासिका के दोनों छिद्र,
ओम् अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु ॥ इस मन्त्र से दोनों आँखें,
ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ॥ इस मन्त्र से दोनों कान,
ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु ॥ इस मन्त्र से दोनों बाहु,
ओम् ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु ॥ इस मन्त्र से दोनों जंघा, और
ओम् अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु ॥

पारस्कर गृ० का० २ । कण्डिका ३ । सू० २५ ॥

इस मन्त्र से दाहिने हाथ से जल स्पर्श करके मार्जन करना। तत्पश्चात् समिधाचयन वेदी में करें पुनः—

अग्न्याधानमन्त्र

ओं भूर्भुवः स्वः ॥ गोभिल गृ० प्र० १ । खं० १ । सू० ११ ।

इस मन्त्र का उच्चारण करके ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य के घर से अग्नि ला अथवा घृत का दीपक जला, उससे कपूर में लगा, किसी एक पात्र में धर उस में छोटी-छोटी लकड़ी लगा के यजमान या पुरोहित

उस पात्र को दोनों हाथों से उठा, यदि गर्म हो तो चिमटे से पकड़ कर अगले मन्त्र से आधान करे। वह मन्त्र यह है—

ओं भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा।
तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ॥१॥

यजु० अ० ३। मं० ५ ॥

इस मन्त्र से वेदी के बीच में अग्नि को धर उस पर छोटे छोटे काष्ठ और थोड़ा कपूर धर, अगला मन्त्र पढ़ के व्यजन से अग्नि को प्रदीप्त करे।

अग्निप्रदीप्त करने का मन्त्र

ओम् उद् बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सꣳसृजेथामयं च।
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥

यजु० अ० १५। मं०५४ ॥

जब अग्नि समिधाओं में प्रविष्ट होने लगे तब चन्दन की अथवा पलाशादि की तीन लकड़ी आठ-आठ अंगुल की घृत में डुबो उनमें से नीचे लिखे एक मन्त्र से एक-एक समिधा को अग्नि में चढ़ावें। वे मन्त्र ये हैं—

समिदाधान के मन्त्र

ओम् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे—इदं न मम ॥ १ ॥

ओं समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा ॥ इदमग्नये—इदं न मम ॥ २ ॥ इससे और

ओं सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जात-

वेदसे स्वाहा ॥ इदमग्नये जातवेदसे—इदं न मम ॥ ३ ॥
इस मन्त्र से अर्थात् दोनों मन्त्रों से दूसरी

ओं तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि । बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा ॥ इदमग्नयेऽङ्गिरसे–इदं न मम ॥ ४ ॥

यजु० अ० ३ । मं० १, २, ३ ॥

इस मन्त्र से तीसरी समिधा की आहुति देवे ।

इन मन्त्रों से समिदाधान करके नीचे लिखे मन्त्र से पाँच आहुति देनी ।

घृताहुतिमन्त्र

ओम् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा ॥ इदमग्नये जातवेदसे—इदं न मम ॥ १ ॥

तत्पश्चात् अञ्जलि में जल लेके वेदी के पूर्व दिशा आदि चारों ओर छिड़कावे, इसके ये मन्त्र हैं:—

जलप्रसेचन के मन्त्र

ओम् अदितेऽनुमन्यस्व ॥ इस मन्त्र से पूर्व,

ओम् अनुमतेऽनुमन्यस्व ॥ इससे पश्चिम,

ओं सरस्वत्यनुमन्यस्व ॥ इससे उत्तर, और—

गोभिलगृ० प्र० १ । खं० ३ । सू० १–३ ॥

ओं देव सवितः प्र सुव यज्ञं प्र सुव यज्ञपतिं भगाय ।
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ॥

यजु० अ० ३० । मं० १ ॥

इस मन्त्र से वेदि के चारों ओर जल छिड़कावे । इसके पश्चात् यज्ञकुण्ड के उत्तर भाग में जो एक आहुति और यज्ञकुण्ड के दक्षिण भाग

में दूसरी आहुति देनी होती है उनको "आघारावाज्याहुती" कहते हैं। और जो कुण्ड के मध्य में आहुतियाँ दी जाती हैं उनको "आज्यभागाहुती" कहते हैं। सो घृतपात्र में से स्रुवा को भर अंगूठा मध्यमा अनामिका से स्रुवा को पकड़ के—

अघारावाज्याहुतिमन्त्र

ओम् अग्नये स्वाहा ॥ इदमग्नये—इदं न मम ॥

इस मन्त्र से वेदि के उत्तर भाग अग्नि में,

ओं सोमाय स्वाहा ॥ इदं सोमाय इदं न मम ॥

गो॰ गृ॰ प्र॰ १ । ख॰ ८ । सू॰ २४ ॥

इस मन्त्र से वेदि के दक्षिण भाग में प्रज्वलित समिधा पर आहुति देनी, तत्पश्चात्

आज्यभागाहुतिमन्त्र

ओं प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये—इदं न मम ॥

ओम् इन्द्राय स्वाहा ॥ इदमिन्द्राय—इदं न मम ॥

इन दो मन्त्रों से वेदि के मध्य में दो आहुति देनी, उसके पश्चात् उसी घृतपात्र में से स्रुवा को भर के प्रज्वलित समिधाओं पर व्याहृति की चार आहुति देवें।

व्याहृत्याहुतिमन्त्र

ओं भूरग्नये स्वाहा ॥ इदमग्नये—इदं न मम ।

ओं भुवर्वायवे स्वाहा ॥ इदं वायवे—इदं न मम ।

ओं स्वरादित्याय स्वाहा ॥ इदमादित्याय—इदं न मम ।

ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा ॥ इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः—इदं न मम ।

ये चार घी की आहुति देकर स्विष्टकृत होमाहुति एक ही दे, यह आज्य वा भात की देनी चाहिए उसका मन्त्र:—

### स्विष्टकृदाहुतिमन्त्र

ओं यदस्य कर्मणोत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम् ।
अग्निष्टत्स्विष्टकृद्विद्यात्सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे ।
अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा ॥ इदमग्नये स्विष्टकृते—इदं न मम ॥ शतपथ कां० १४ । ९ । ४ । २४ ॥

इससे एक आहुति करके प्राजापत्याहुति नीचे लिखे मन्त्र को मन में बोल के देनी चाहिये ।

### प्राजापत्याहुतिमन्त्र

ओं प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये—इदं न मम ॥

इससे मौन करके एक आहुति देकर चार आज्याहुति घृत की देवें ।

### आज्याहुतिमन्त्र

ओं भूर्भुवः स्वः । अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः ।
आरे बाधस्व दुच्छुनां स्वाहा ॥ इदमग्नये पवमानाय-इदन्न मम ॥१॥
ओं भूर्भुवः स्वः । अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः ।
तमीमहे महागयं स्वाहा ॥ इदमग्नये पवमानाय—इदन्न मम ॥२॥
ओं भूर्भुवः स्वः । अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम् ।
दधद्रयिं मयि पोषं स्वाहा ॥ इदमग्नये पवमानाय—इदन्न मम ॥३॥
ऋ० मं० ९ । सू० ६६ । मं० १९, २०, २१ ॥

ओं भूर्भुवः स्वः । प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणां

स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये—इदन्न मम ॥ ४ ॥

ऋ० मं० १० । सू० १२१ ।

इन से घृत की चार आहुति करके "अष्टाज्याहुति" के [illegible] लेखित मन्त्रों से सर्वथा मङ्गल कार्यों में ८ ( आठ ) आहुति [illegible] । वे आठ आहुतिमन्त्र ये हैं--

अष्टाज्याहुति[illegible]न्त्र

ओं त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेळोऽव यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्र मुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा ॥ इदमग्नीवरुणाभ्याम्—इदन्न मम ॥ १ ॥

ओं स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ । अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृळीकं सुहवो न एधि स्वाहा ॥ इदमग्नीवरुणाभ्याम्—इदन्न मम ॥ २ ॥

ऋ० मं० ४ । सू० १ । मं० ४, ५ ॥

ओम् इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय । त्वामवस्युरा चके स्वाहा । इदं वरुणाय—इदन्न मम ॥३॥ ऋ० मं० १ । सू० २५ । मं० १९॥

ओं तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्र मोषीः स्वाहा ॥ इदं वरुणाय—इदन्न मम ॥ ऋ० मं० १ । सू० २४ । मं० ११ ॥

ओं ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा ॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः—इदन्न मम ॥ ५ ॥

ओम् अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्वमयासि ।

अथा नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजं स्वाहा ॥ इदमग्नये अयसे–इदन्न मम ॥ ६ ॥ कात्या० २५–१।११॥

ओम् उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा ॥ इदं वरुणाया-ऽऽदित्यायादितये च–इदन्न मम ॥ ऋ० मं० १। सू० २४। मं० १५ ॥

ओं भवतन्नः समनसौ सचेतसावरेपसौ। मा यज्ञंहिंसिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा ॥ इदं जातवेदोभ्याम्–इदन्न मम ॥ यजु० अ० ५। मं० ३ ॥

---

## दैनिक अग्निहोत्र के मन्त्र

॥ प्रातःकाल आहुति के मन्त्र ॥

ओं सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ॥ १ ॥
ओं सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥ २ ॥
ओं ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥ ३ ॥
ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या। जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ॥ ४ ॥

॥ सायंकाल आहुति के मन्त्र ॥

अब नीचे लिखे हुए मन्त्र सायंकाल में अग्निहोत्र के जानो।

ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥ १ ॥
ओम् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥ २ ॥
ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥ ३ ॥

इस तीसरे मन्त्र को मन से उच्चारण करके तीसरी आहुति देनी चाहिये—

ओं सुजूर्देवेन सवित्रा सुजूरात्र्येन्द्रवत्या । जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा ॥ ४ ॥ यजु० अ० ३ । मं० ९, १० ॥

॥ दोनों काल के मन्त्र ॥

अब निम्नलिखित मन्त्रों से प्रातः सायं आहुति देनी चाहियें—

ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा ॥ इदमग्नये प्राणाय इदं न मम ॥१॥

ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा ॥ इदं वायवेऽपानाय इदं न मम ॥२॥

ओंस्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा॥इदमादित्याय व्यानाय इदं न मम ३

ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा ॥ इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्य इदं न मम ॥ ४ ॥

ओम् आपो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा ॥ ५ ॥

ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते ।

तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥

यजु० अ० ३२ मं० १४ ॥

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव ।

यद् भद्रं तन्न आ सुव स्वाहा ॥ ७ ॥ य० अ० ३० । मं० ३ ॥

ओम् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ॥ युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमउक्तिं विधेम स्वाहा ॥८॥

यजु० अ० ४० । मं० १६ ॥

इन आठ मन्त्रों से एक-एक मन्त्र करके एक-एक आहुति, ऐसे आठ आहुति देवें—

ओं सर्वं वै पूर्णं ँ स्वाहा ॥

इस मन्त्र से तीन पूर्णाहुति अर्थात् एक-एक बार पढ़के एक-एक करके तीन आहुति देवें ॥

इत्यग्निहोत्रविधिः संक्षेपतः समाप्तः ॥

## पूर्णमासी की आहुतियाँ

—ओं अग्नये स्वाहा ॥ १ ॥ ओं अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा ॥ २ ॥ ओं विष्णवे स्वाहा ॥ ३ ॥

## अमावास्या की आहुतियाँ

ओं अग्नये स्वाहा ॥ १ ॥ ओं इन्द्राग्नीभ्यां स्वाहा ॥ २ ॥ ओं विष्णवे स्वाहा ॥ ३ ॥

## ( ३ ) अथ पितृयज्ञः

अग्निहोत्र के पश्चात् पितृयज्ञ है। पितृयज्ञ अर्थात् जीते माता, पिता, आचार्य, गुरु, उपाध्याय आदि मान्यों की यथावत् सेवा करना पितृयज्ञ कहाता है। ॥ इति पितृयज्ञः ॥

## ( ४ ) अथ भूतयज्ञः (बलिवैश्वदेव)

निम्नलिखित दश मन्त्रों से घृत मिश्रित क्षीर और लवणान्न को छोड़कर पाकशाला में जो कुछ भोजन बना हो, उसी की आहुति करें—

ओं अग्नये स्वाहा ॥ ओं सोमाय स्वाहा ॥ ओमग्नीषोमाभ्यां स्वाहा ॥ ओं विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ॥ ओं धन्वन्तरये स्वाहा ॥ ओं कुह्वै स्वाहा ॥ ओमनुमत्यै स्वाहा ॥ ओं प्रजापतये स्वाहा ॥ ओं द्यावापृथिवीभ्या ँ स्वाहा ॥ ओं स्विष्टकृते स्वाहा ॥

तत्पश्चात् निम्नलिखित मन्त्रों से बलिदान करे। एक पत्तल व थाली में यथोक्त दिशाओं में भाग रखना। यदि भाग रखने के काल में कोई अतिथि आ जाय तो उसी को दे देना, अथवा अग्नि में डालना चाहिए—

### भाग रखने के मन्त्र—

ओं सानुगायेन्द्राय नमः ॥ (इससे पूर्व) ॥ ओं सानुगाय यमाय नमः। (इससे दक्षिण)। ओं सानुगाय वरुणाय नमः ॥ ( इससे पश्चिम )। ओं सानुगाय सोमाय नमः। (इससे उत्तर) ओं मरुद्भ्यो नमः ॥ ( इससे द्वार ) ओं अद्भ्यो नमः ॥ ( इससे जल ) ओं वनस्पतिभ्यो नमः ॥ ( इससे मूसलोखल )। ओं श्रियै नमः ॥ ( इससे ईशान )। ओं भद्रकाल्यै नमः। (इस से नैर्ऋत्य)। ओं ब्रह्मणे नमः ॥

**ओं वास्तुपतये नमः** ( इनसे मध्य ) । **ओं विश्वेभ्यो नमः ॥ ओं दिवाचरेभ्यो भूतेभ्यो नमः । ओं नक्तंचारिभ्यो भूतेभ्यो नमः ॥** (इनसे ऊपर) । **ओं सर्वात्मभूतये नमः ॥** ( इससे पृष्ठ ) । **ओं पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः ।** ( इससे दक्षिण ) ।

तत्पश्चात् निम्नलिखित छः भाग घी के साथ लवणान्न को लेके रक्खे—

**शुनां च पतितानां च श्वपचां पापरोगिणाम् ।**
**वायसानां कृमीणां च शनकैर्निर्वपेद् भुवि ॥**

मनु० अ० ३ । श्लोक ९२ ॥

**अर्थ**—कुत्ते, पतित, चाण्डाल, पापरोगी, काक और कृमि इन छः नामों से छः भाग पृथिवी में धरे । और छः भाग जिस २ नाम के हों उस २ को देवे ॥ इति बलिवैश्वदेवविधिः ॥

## ( ५ ) अतिथियज्ञः

**तद्यस्यैवं विद्वान् व्रात्योऽतिथिर्गृहानागच्छेत् ॥ १ ॥**
**स्वयमेनमभ्युदेत्य ब्रूयाद् व्रात्य क्वावात्सीर्व्रात्योदकं व्रात्य तर्प्पयन्तु व्रात्य यथा ते प्रियं तथास्तु व्रात्य यथा ते वशस्तथास्तु व्रात्य यथा ते निकामस्तथास्त्विति ॥ २ ॥**

अथर्व० कां० १५ । सू० ११ । म १–२ ॥

जब पूर्ण विद्वान् परोपकारी सत्योपदेशक, गृहस्थों के घर आवें, तब गृहस्थ लोग स्वयं समीप जाकर उक्त विद्वानों को प्रणाम आदि करके उत्तम आसन पर बैठाकर पूछें कि कल के दिन कहां आपने निवास किया था ? हे ब्रह्मन् ! जलादि पदार्थ जो आपको अपेक्षित हों ग्रहण कीजिये, और हम लोगों को अपने सत्योपदेश से तृप्त कीजिए ।

जो धार्मिक परोपकारी सत्योपदेशक, पक्षपातरहित, शान्त, सर्वहितकारक विद्वानों की अन्नादि सेवा, उनसे प्रश्नोत्तर आदि करके विद्या प्राप्त करना **अतिथियज्ञ** कहाता है, उसको नित्य प्रति किया करें ।

इन पंचमहायज्ञों को स्त्री और पुरुष दोनों प्रतिदिन किया करें ।

# सत्सङ्ग भजन

## राष्ट्रीय प्रार्थना (१)

ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम् आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम्। दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः। सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्॥ यजु० अ० २२। २१॥

## भजन—२

ब्रह्मन्! सुराष्ट्र में हों, द्विज ब्रह्म तेजधारी।
क्षत्रिय महारथी हों, अरिदल विनाशकारी॥
होवें दुधारू गौएं, पशु अश्व आशुवाही।
आधार राष्ट्र की हों, नारी सुभग सदा ही॥
बलवान् सभ्य योद्धा, यजमान पुत्र होवें।
इच्छानुसार वर्षें, पर्जन्य ताप धोवें॥
फल फूल से लदी हों, औषध अमोघ सारी।
हो योग क्षेमकारी, स्वाधीनता हमारी॥

## यज्ञ-प्रार्थना—३

पूजनीय प्रभो हमारे भाव उज्ज्वल कीजिये।
छोड़ देवें छल कपट को मानसिक बल दीजिये॥ १॥
वेद की बोलें ऋचायें सत्य को धारण करें।
हर्ष में हों मग्न सारे शोक सागर में तरें॥ २॥
अश्वमेधादिक रचाने यज्ञ पर उपकार को।
धर्म मर्यादा चलाकर लाभ दें संसार को॥ ३॥
नित्य श्रद्धा भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें।
रोग पीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहें॥ ४॥

कामना मिट जाये मन से पाप अत्याचार की।
भावनाएँ पूर्ण होवें यज्ञ से नर नारि की ॥ ५ ॥
लाभकारी हों हवन हर जीवधारी के लिए।
वायु जल सर्वत्र हो शुभ गन्ध को धारण किये ॥ ६ ॥
स्वार्थ भाव मिटे हमारा प्रेम-पथ विस्तार हो।
इदन्नमम का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो ॥ ७ ॥
हाथ जोड़ झुकाये मस्तक वन्दना हम कर रहे।
नाथ करुणा रूप करुणा आपकी सब पर रहे ॥ ८ ॥

## भजन-४

हे दयामय हम सबों को शुद्धताई दीजिये।
दूर करके हर बुराई को भलाई कीजिये ॥ टेक ॥
कीजिये ऐसा अनुग्रह हम पै हे परमात्मा।
हों सभासद् इस सभा के सब के सब धर्मात्मा ॥ १ ॥
हो उजाला सब के मन में ज्ञान के प्रकाश से।
और अन्धेरा दूर सारा हो अविद्या नाश से ॥ २ ॥
खोटे कर्मों से बचें और तेरे गुण गावें सभी।
छूट जावें दुःख सारे सुख सदा पावें सभी ॥ ३ ॥
सारी विद्याओं को सीखें ज्ञान से भरपूर हों।
शुभ कर्म में होवे तत्पर दुष्ट गुण सब दूर हों ॥ ४ ॥
यज्ञ हवन से हो सुगन्धित अपना भारतवर्ष देश।
वायु जल सुखदायी होवें जायं मिट सारे क्लेश ॥ ५ ॥
वेद के प्रचार में होवें सभी पुरुषार्थी।
होवे आपस में प्रीति और बनें परमार्थी ॥ ६ ॥
लोभी कामी और क्रोधी कोई भी हम में न हो।
सर्व व्यसनों से बचें और छोड़ देवें मोह को ॥ ७ ॥
अच्छी संगत में रहें और वेद मार्ग पर चलें।
तेरे ही होवें उपासक और कुकर्मों से बचें ॥ ८ ॥
कीजिये हम सब का हृदय शुद्ध अपने ज्ञान से।
मान भक्तों में बढ़ाओ अपने भक्ति-दान से ॥ ९ ॥

## भजन—५

आज मिल सब गीत गाओ उस प्रभु के धन्यवाद।
जिसका यश नित गाते हैं गन्धर्व मुनिजन धन्यवाद॥
मन्दिरों में कन्दरों में पर्वतों के शिखर पर।
देते हैं लगातार सौ सौ बार मुनिवर धन्यवाद॥
करते हैं जंगल में मंगल पक्षिगण हर शाख पर।
पाते हैं आनन्द मिल गाते हैं स्वर भर धन्यवाद॥
कूप में तालाब में सागर की गहरी धार में।
प्रेम रस में तृप्त हो करते हैं जलचर धन्यवाद॥
शादियों में कीर्तनों में यज्ञ और उत्सव के आदि।
मीठे स्वर में चाहिए कर नारी नर सब धन्यवाद॥
गान कर 'अमीचन्द' भजनानन्द ईश्वर स्तुति।
ध्यान धर सुनते हैं श्रोता कान धर धर धन्यवाद॥

## भजन—६

तुम्हारी कृपा जो आनन्द पाया,
वाणी से जाय वह क्यों कर बताया।
नहीं है यह वह रस जिसे रसना चाखे,
नहीं रूप उसका कभी दृष्टि आया।
नहीं है वह गुण गन्ध को घ्राण जाने,
त्वचा से न जाये वह छुआ छुआया॥
संख्या में आना असम्भव है उसका,
दिशा काल में भी रहे न समाया।
तुझ सा न दाता है, तुझ सा न दानी
इतना बड़ा दान जिसने दिलाया।
आत्मोन्नति में तुम्हारी दया से,
मेरी जिन्दगी ने अजब पलटा खाया।
सत् चित आनन्द अनन्त स्वरूप,
मुझे मेरे अनुभव से निश्चय कराया।
गूंगे को रसना के सदृश "अमीचन्द"
कैसे बताये कि क्या रस उड़ाया।

### भजन ७

ओं है जीवन हमारा, ओं प्राणाधार है।
ओं है कर्त्ता विधाता ओं पालनहार है॥
ओं है दुःख का विनाशक, ओं सर्वानन्द है।
ओं है बल तेज धारी, ओं करुणानन्द है॥
ओं सब का पूज्य है, हम ओं का पूजन करें।
ओं ही के ध्यान से, हम शुद्ध अपना मन करें॥
ओं के गुरु मन्त्र जपने से रहेगा शुद्ध मन।
बुद्धि दिन प्रतिदिन बढ़ेगी, धर्म में होगी लगन॥
ओं के जप से हमारा ज्ञान बढ़ता जायेगा।
अन्त में यह ओं हमको मुक्ति तक पहुंचायेगा॥

### भजन ८

शरण प्रभु की आओ रे, यही समय है प्यारे॥
आओ प्रभु गुण गाओ रे, यही समय है प्यारे॥
उदय हुआ ओ३म् नाम का भानु, आओ दर्शन पाओ रे॥
अमृत झरना झरता है इसे पीकर अमर हो जाओ रे॥
छल कपट और झूठ को त्यागो, सत्य में चित्त लगाओ रे॥
हरि की भक्ति बिन नहीं मुक्ति, दृढ़ विश्वास जमाओ रे॥
करलो नाम प्रभु का सुमिरन, नहीं पीछे पछताओ रे॥
छोटे बड़े सब मिल कर खुशी से, गुण ईश्वर के गाओ रे॥

### भजन ९

पितु मात सहायक स्वामी सखा तुम ही एक नाथ हमारे हो।
जिनके कछु और अधार नहीं, तिन के तुम ही रखवारे हो॥१॥
सब भांति सदा सुखदायक हो, दुख दुर्गुण नाशन हारे हो।
प्रतिपाल करो सगरे जग को, अतिशय करुणा उर धारे हो॥२॥

भूलि हैं हम ही तुमको, तुम तो हमरो सुधि नाहिं बिसारे हो।
उपकारन को कछु अन्त नहीं, छिन ही छिन जो विस्तारे हो ॥३॥
महाराज महा महिमा तुम्हरी, समझें विरले बुधिवारे हो।
शुभ शान्ति निकेतन प्रेमनिधे मन मन्दिर के उजियारे हो ॥४॥
यहि जीवन के तुम जीवन हो, इन प्राणन के तुम प्यारे हो।
तुम सों प्रभु पाय प्रताप हरि, केहि के अब और सहारे हो ॥५॥

—**—

भजन १०

ओ३म् जय जगदीश पिता, प्रभु जय जगदीश पिता।
विश्व विरंच विधाता, जगत्राता सविता ॥ ओं ॥
अनन्त अनादि अजन्मा, अविचल अविनाशी।
सत्य सनातन स्वामी, शंकर सुख राशी ॥ ओं ॥
सेवक जन सुखदायक, जननायक तुम हो।
शुभ सुख शान्ति सुमंगल, वरदायक तुम हो ॥ ओं ॥
मैं सेवक शरणागत, तुम मेरे स्वामी।
हृदय पटल में प्रगटो, प्रभु अन्तरयामी ॥ ओं ॥
काम, क्रोध, मद, मोह, कपट, छल व्यापे नहिं मन में।
लगन लगे मम मन की, गुण तेरे वर्णन की ॥ ओं ॥
नित्य निरन्जन निशदिन, तेरो ही जाप करें।
तव प्रताप से स्वामी, तीनों ही ताप हरें ॥ ओं ॥
पतित उद्धारण तारण, शरणागत तेरी।
भूल न भटकें भ्रम में, निर्मल मति मेरी ॥ ओं ॥
शुद्धि बुद्धि से मन में, तेरो ही वरण करें।
सब विधि छल बल तज के तेरी ही शरण पड़े ॥ ओं ॥

## भजन ११

अजब हैरान हूँ भगवन् ? तुम्हें क्यों कर रिझाऊं मैं ।
कोई वस्तु नहीं ऐसी जिसे सेवा में लाऊं मैं ॥ अजब० ॥
करें किस तरह आवाहन कि, तुम मौजूद हो हर जाँ ।
निरादर है बुलाने को अगर घण्टा बजाऊं मैं ॥ अजब० ॥
तुम्हीं हो मूर्तियों में भी, तुम्हीं व्यापक हो फूलों में ।
भला भगवान् पर भगवान् को क्यों कर चढ़ाऊं मैं ॥ अजब० ॥
लगाना भोग कुछ तुमको, यह एक अपमान करना है ।
खिलाता है जो सब जग को, उसे क्या कर खिलाऊ मैं ॥ अजब० ॥
तुम्हारी ज्योति से रोशन हैं, सूरज चांद और तारे ।
महा अन्धेर है कैसे, तुम्हें दीपक दिखाऊं मैं ॥ अजब० ॥
भुजायें हैं न गर्दन है न सीना है न पेशानी ।
तुम हो निर्लेप नारायण ! कहां चन्दन लगाऊं मैं ॥ अजब० ॥

## भजन १२

ओ३म् जय जगदीश हरे, पिता जय जगदीश हरे ।
भक्त जनन के संकट, क्षण में दूर करे ॥ १ ॥
जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनशे मन का ।
सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ॥ २ ॥
मात पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी ।
तुम बिन और न दूजा, आस करूं जिसकी ॥ ३ ॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तरयामी ।
परम ब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी ॥ ४ ॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता ।
दीन दयालु कृपालु, कृपा करो भर्ता ॥ ५ ॥
तुम हो एक अगोचर, सब के प्राण पती ।
किस विध मिलूं दयामय, तुम को मैं कुमती ॥ ६ ॥
दीनबन्धु दुख हर्ता, तुम रक्षक मेरे ।
करुणा हस्त बढ़ाओ, शरण पड़ा तेरे ॥ ७ ॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ॥ ८ ॥

॥ ओ३म् ॥

# संगठन सूक्त

ओ३म् सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर ॥ १ ॥

प्रभो ! तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को।
वेद सब गाते तुम्हें हैं कीजिये धन वृष्टि को ॥

संगच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते ॥ २ ॥

प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो ।
पूर्वजों की भाँति तुम कर्तव्य के मानी बनो ॥

समानो मन्त्रः समितिः समानी
समानं मनः सहचित्तमेषाम् ।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः
समानेन वो हविषा जुहोमि ॥ ३ ॥

हों विचार समान सबके चित्त मन सब एक हों ।
ज्ञान देता हूं बराबर भोग्य पा सब नेक हों ॥

समानी व आकूती समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥ ४ ॥

हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा ।
मन भरे हों प्रेम से जिससे बढ़े सुखसम्पदा ॥

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः
शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वँ
शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शन्तिरेधि ॥

बदलिया प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली ।

❀ ओ३म् ❀

# आर्य्यसमाज के नियम व उद्देश्य

१—सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।

२—ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

३—वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

४—सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

५—सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहियें।

६—संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७—सब से प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।

८—अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

९—प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

१०—सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

...लगे की भी
...र्यी है ।

...के अग्निकाण्ड की
... ही हुए सदैनिकल
...रसों वह रवाना
...जली सिगरेट तथा
इस आग को बुझाने
... जवान २४ घण्टे
...आग जंगल से कटी
... गोदाम में लगी
...ल द्वारा दूसरे स्थानों
...ती है ।
...की के राजापुर गाँव
...ाउड के फलस्वरूप
...ये तथा खलिहानों
...ज भी आग की लपटों
...ख हो गया । प्रग-
... ०० हजार रुपये
... अग्निकांड में
... ।
... गोइला गाँव में
... आग में ...
...कारियों ...

...दिल्ली, २८ मई । ... संसद जाँच समिति के बैठक आज यहाँ समाप्त हो गयी । बैठक में संसद प्रणाली में सुधार करने के लिये जनता के राय जानने के लिये दो प्रकार के प्रश्नावली तैयार की गयी । एक आम जनता के राय जानने के लिये और दूसरा फिल्मी निर्माताओं के राय जानने के लिये । (भारती)

## मुंशी के स्वतंत्र पार्टी से अलग होने की संभावना

बम्बई, २८ मई । यदि गुजरात स्वतंत्र पार्टी से "विद्रोही" स्वतंत्र सदस्य दल से नहीं निकाले गये तो पार्टी के उपाध्यक्ष श्री के. एम. मुंशी पार्टी से इस्तीफा ... है ।

...गों से अभद्र ... जाने तथा मारपीट छीन लेने की अनेक शिका... प्राप्त होती रहती हैं तथा अधि... कारियों को भी सूचित किया जाता है ।

सेना के प्रमुख नागरिकों ने एक संयुक्त वक्तव्य में अधिकारियों से इस शराब की दुकान को तुरन्त हटाये जाने की माँग की है ।

## भोजपुर में सशस्त्र डाका : ३ घायल

कान...र, मंगलवार । डेरापुर पुलिस क्षेत्र के गाँव भोजपुर में कल रात ... एक सशस्त्र डकैती में डा... ८ हजार रुपयों की सम्प... और ३ व्यक्तियों ...

## ...नात के ...
## खाली करने की नोटि...
## के सिंचाई ...

चंडीगढ़, २८ मई । पंजाब के सिंचाई मंत्री श्री नाथा सिंह... नैनीताल जिले के तराई क्षेत्र... रहने वाले पंजाबियों ... संबंध में उत्तरप्रदेश सरका... एक प्रवक्ता ने उस वक्तव्... विरोध किया जिसमें कि ... क्षेत्र में रहने वाले अधि... पंजाबियों को अनधिकृत रूप... रहने वाला बताकर ज... करने की नोटिसें जा... है । उन्होंने कहा कि नो...

१—सब ... का आदि

२—ईश्वर ...

... और ...

४—सत्य के ... रहना ...

५—सब ... करके ...

६—संसार का ... अर्थात् शारी...

७—सब से प्रीतिपूर्वक ...

८—अविद्या का नाश ...

९—प्रत्येक ... सब ...

१०—सब ... परतन्त्र रह... स्वतन्त्र रहें।